# History Honours Paper – II
## इंगलैण्ड का इतिहास

**Q.** क्रामवेल के संवैधानिक प्रयोगों का विश्लेषण करें।

**Ans** → ओलिवर क्रामबेल का जन्म 1699 ई० में हन्टिंगटन में हुआ था। वह संक्रान्तिकाल की सभी उपजों में सबसे अच्छी उपज थी। वह पक्का प्युरिटन था और तहेदिल से अंग्रेजों के नैतिक स्तर को उठाना चाहता था। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि जिस काम को वह करने के लिये ठानता उसको कर के ही दम लेता था। महान विरोध-पत्र के समय उसने अपने हृदय के सच्चे उद्गारों को इस प्रकार प्रकट किया था – "यदि विरोध-पत्र को स्वीकार नहीं किया गया तो मैं दूसरे ही दिन अपना सब कुछ बेच-बाचकर इंग्लैण्ड को हमेशा के लिए नमस्कार कर प्रदेश चला जाता।" वह एक कट्टर आस्तिक था।

**Heads of Proposals :→** उसके विचार नूतन थे। वह इंगलैण्ड में एक शासन व्यवस्था की स्थापना करना चाहता था। इसके लिए उसे सर्वप्रथम शासन-यन्त्रों पर अधिकार करना था। शीघ्र ही उसे इस दिशा में सफलता मिल गई। सम्पूर्ण शासन यन्त्रों पर उसका एकछत्र अधिकार हो गया। उसने अपने विचारों को अविलम्ब ही कार्यान्वित करने के लिए कोशिश की। सबसे पहले वह इंगलैण्ड के संविधान की ओर अपना ध्यान ले गया। उसने देखा कि वहाँ का संविधान सड़ कर गल गया है, जिसकी दुर्गन्ध निकलकर देश के सारे वातावरण को विषाक्त कर रही है। इस बुराई को दूर करने के लिए उसने शीघ्र ही एक दस्तावेज बनाया जो इंगलैण्ड के इतिहास में "Heads of Proposals" के नाम से प्रसिद्ध है। इस दस्तावेज में निम्नलिखित बातें थी –

① राजा को पार्लियामेन्ट के अधीन रखा गया और पार्लियामेन्ट का आधार जनमत को घोषित किया गया।

Scanned with CamScanner

(2) पार्लियामेन्ट के सीटों के बँटवारा समता के आधार पर अनुपातिक (Proportional) ढंग से किया जाय।

(3) पार्लियामेन्ट को युद्ध के समय अधिक अधिकार देने की व्यवस्था थी। अर्थात देश के सभी कार्यों में पार्लियामेंट की इच्छा को ही सर्वोपरी माना गया था।

(4) धार्मिक दिशा में सहिष्णुता की नीति को अपनाने का पूर्ण अधिकार पार्लियामेन्ट को दी दिया गया।

(5) बारह महीनों में कम से कम एक बार पार्लियामेन्ट आवश्य बैठती और उसका अधिवेशन का कार्यकाल छः महीने का रखा गया था।

देश की परिस्थिति के मोताबिक इन सभी नवीन विचारों को कार्यान्वित करने के पक्ष में लोग नहीं थे। इसी बीच परिस्थिति से विवश होकर सन 1649 ई० के जनवरी महीने में चार्ल्स प्रथम को शूली पर चढ़ा दिया गया। जिसके फलस्वरूप इंगलैण्ड के राजा का स्थान रिक्त हो गया। सैनिक परिषद ने शीघ्र ही इस गंभीर समस्या को हल करने के लिए एक दूसरा दस्तावेज बनवाया। इसी दस्तावेज को लोग "Agreement of the people" कहकर पुकारते हैं। इस दस्तावेज में निम्न बातें प्रमुख थी —

(1) प्रथम पार्लियामेन्ट को भंग कर, एक नई पार्लियामेन्ट की स्थापना करने का विचार था, जिसमें 400 सदस्यों की रखने की बात थी।

(2) साल में कम-से-कम एक बार पार्लियामेन्ट

को अवश्य बैठना चाहिए।
(3) Council of State को चुनने का अधिकार पार्लियामेन्ट को ही दिया गया। वही संस्था देश की प्रमुख कार्यकारिणी संस्था मानी गई।
(4) राजा के आगे-पीछे चलने वाले सभी समर्थकों के अतिरिक्त Poor-rate चुकाने वाले सभी लोगों को अपना-अपना मत देने का अधिकार प्राप्त हो गया।

लोगों ने 1649 ई० के मार्च महीने में इंगलैण्ड से राजतंत्र को विदा कर दिया। उसी साल के मई महीने में राजा के समर्थकों का गढ़ - लार्ड सभा को भी अन्त कर दिया। इसके बाद इंगलैण्ड को Commonwealth (राष्ट्रमंडल) घोषित कर दिया गया। ऊपर के सभी कार्य Rump Parliament ने किये थे। वास्तव में उसके ये सभी कार्य बहुत अच्छे थे लेकिन जब राज्य की पार्लियामेन्ट भी अपने क्षेत्रों और अधिकारों को विस्तृत करने की मांग करने लगी तो क्रामवेल के गुस्से की कोई सीमा नहीं रही। उसने चिढ़ कर 20 अप्रैल 1653 ई० को, जब पार्लियामेन्ट के सभी सदस्य West Minister के White Hall में एक बिल पर बहस कर रहे थे, ठीक उसी समय क्रामवेल एक छोटी सेना की टुकड़ी लेकर उधर चल पड़ा। पहले तो उसने शांति से चाहा कि रम्प पार्लियामेन्ट खुद बर्खास्त हो जाय लेकिन जब रम्प ने उसकी बातों का उल्लंघन कर दिया तो क्रामवेल गुस्से से तमतमा उठा और उसने एक सांस में ही पार्लियामेन्ट के सदस्यों को अनेक तरह की गालियाँ (corrupt, unjust, rogues और scandalous) दी। वह सभा भवन में जाकर चिल्ला उठा — "I will put an end to

this. It is not fit you should sit here any longer. You are no Parliament." और उसने अपने सिपाहियों को निकट बुलाकर सभा भवन में उन सबों को निकाल बाहर करने की आज्ञा दे दी। इसके बाद भी वह फिर चिल्ला उठा – "What shall we do with this bouble.?" इतना कहकर उसने टेबुल पर से अध्यक्ष का राजदंड अपने हाथ में ले लिया और कहने लगा – "This is not honest, yet it is against morality and common honesty." उसने सबों को सभा भवन से निकाल दिया और सभा भवन के दरवाजे में ताला लगवाकर उसकी चाभी अपने जेब में रख लिया। दूसरे दिन सुबह में कुछ राजपथ के लोगों ने दरवाजे पर एक बोर्ड चिपका दिया कि – "This house to let, not unfurnished." इस प्रकार Long parliament का चिन्ह भी सन् 1653 ई० में समाप्त हो गया।

उसने 5 जुलाई 1653 ई० को एक छोटी पार्लियामेन्ट जो Barebone's parliament कहलाती है, बुलाया। इस Parliament के सभी सदस्य प्युरिटन था। इस Parliament के कुल सदस्यों की संख्या 140 थी।

इसमें संदेह नहीं कि क्रामवेल एक महान शासक था परन्तु कुछ लोगों का कथन है कि उसके वैधानिक प्रयोग (Constitutional experiments) असफल रहे और भविष्य को वह प्रभावित नहीं कर सका। "He would have gladly submitted to the restraints of a Constitution if only his right to act as a King were fully acknowledged."

— Montague

x